ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 26-28
www.allresearchjournal.com
Received: 11-04-2015
Accepted: 10-05-2015

डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय,(दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence:
डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त
एसोसिएट प्रोफेसरएसंस्कृत विभाग,देशबन्धु महाविद्यालयए;दिल्ली विश्वविद्यालय

विवेकानंदचरितं महाकाव्य में छंद:प्रयोग

डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त

ग्रन्थ परिचय

रचनाकार ----------पंडित त्र्यम्बक शर्मा भण्डारकर

प्रकाशक रचना ----------श्रीस्वामि विवेकानंदचरितं नाम महाकाव्यम्

----------चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस ,वाराणसी.

ग्रन्थ की प्रस्तावना ----डॉ मंगलदेव शास्त्री १७ /९/६८, वाराणसी

पंडित त्र्यम्बक शर्मा भण्डारकर का संक्षिप्त परिचय :---

जन्म समय -------- १८९७

जन्म स्थान -------- ग्राम तोरण, वैनंग तट के समीप; चंद्रपुर, महाराष्ट्र।

महाराष्ट्र प्रदेशांतश्चंद्रपुराख्य मंडले।
जातोऽहं तोरण ग्रामे वैनंग तटान्तिकम्।। (विद्यार्थी आत्मचरितम्)

प्रारंभिक शिक्षा------ पद्मपुर,महाकवि भवभूति की जन्मस्थली

उच्च शिक्षा ---------- वाराणसी में।

उपनयन काल की अलौकिक घटना ------१९०२ (विवेकानंद का प्रयाणकाल)

गुरुपरंपरा--------पदमपुर में आचार्य जयराम घुसे
काशी में म. म. लक्ष्मण गंगाधर शास्त्री, पटवर्धन,
श्रीतात्य शास्त्री,श्री नित्यानंद पंडित

प्रेरणास्रोत : डॉ. गंगानाथ झा

अध्यापन : वसंत महिला महाविद्यालय (हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से संबद्ध) में सेवानिवृत्ति तक तथा सेवानिवृत्ति के बाद गंगा तट पर अन्य संस्था में मृत्युपर्यंत अध्यापन।

काव्य रचना के लिए प्राचीन लक्षणग्रंथकारों द्वारा जिन मापदंडों का निर्धारण किया गया है तदनुसार रचे गए साहित्य को विद्वानों द्वारा आदर की दृष्टि से देखा जाता है। संस्कृत काव्य परंपरा में आदि कवि से लेकर अद्यावधि प्रसूत रचनाओं में छंद:प्रयोग की भावानुरूप क्रियान्विति परिलक्षित होती है। कालिदास आदि महाकवियों द्वारा छंदों के युक्तियुक्त प्रयोग के आधार पर ही क्षेमेन्द्र ने अपने सुवृत्ततिलक में विभिन्न छंदों के प्रयोग का निदर्शन कराया है। काव्यलक्षणकारों ने काव्य के विभिन्न तत्वों के उपस्थापन के साथ छंदों के प्रयोग पर भले ही विचार न किया हो तथापि आचार्य दंडी द्वारा 'सा विद्या या विमुक्तये' तथा आचार्य मम्मट द्वारा 'काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास:' जैसे कथन काव्य में छंद:प्रयोग के महत्त्व की ओर संकेत करते दिखाई देते हैं।

आधुनिककाल की काव्यसर्जना में छंद:प्रयोग का पारंपरिक वैशिष्ट्य दृष्टिगोचर होता है। पंडित त्र्यम्बक शर्मा भण्डारकर रचित 'स्वामी विवेकानन्दचरितम्' महाकाव्य में छंदों के विविध प्रयोग न केवल निर्दिष्ट परंपरा का निर्वहन करते दिखाई पड़ते हैं अपितु सृजनशीलता का एक नव्य रूप प्रकट करते हैं। आचार्य भण्डारकर का छंद:प्रयोग उनके छंद:प्रयोग विषयक प्रवर पांडित्य का बोध कराता है। उनके द्वारा रचित इस महाकाव्य में

अनुष्टुप, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता, उपजाति, वंशस्थ, मालिनी, स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडित एवं रथोद्धता का सुष्ठु प्रयोग किया गया है। महाकाव्य का दशम सर्ग छंद:प्रयोग के प्रति कवि की उत्कट अभिलाषा का परिचायक है। छन्द:प्रयोग के साथ ही उसी छन्द का श्लेष के रूप में प्रत्याख्यान का एक प्रयोग द्रष्टव्य है

ख्रिश्ता बौद्धा जिनमतपरा कान्फ्युसीयानमार्गा
ज्यूधर्मीया स्वपथनिपुणा मुस्लिमा हिन्दवोपि ।
शिन्तोधर्मप्रतिनिधिजना जारथ्रुष्टाजना ये
मन्दाक्रान्ता:सदसि मुदिता: पार्श्वयोश्चोपविष्टा ।।१०/४।।

उपर्युक्त पद्य मन्दाक्रान्ता छन्द में है, चतुर्थ चरण में मन्दाक्रान्ता पद का प्रयोग शनैः शनैः आगच्छन्त: के अर्थ में हुआ है। छंद:प्रयोग का यही विशेषता इस महाकाव्य को इसी दृष्टि से अध्ययन करने हेतु प्रेरित करती है।

श्रीस्वामि विवेकानंदचरित महाकाव्य की विषयवस्तु
१८ सर्गों का महाकाव्य परम पुनीत चरित्र के आगार, भारतीय जनमानस के हृदय को आह्लादित करने में समर्थ, विश्व शान्ति के प्रतीक स्वामी विवेकानंद के उदात्त चरित्र की वैभवगाथा प्रस्तुत करता है। प्रत्येक सर्ग का शीर्षक महाकाव्य की विषयवस्तु को सरलता के साथ प्रस्तुत करता है जिसे इस रूप में देखा जा सकता है
१. प्रथम सर्ग ----------संकल्प विकल्प नाम
२. द्वितीय सर्ग----------संगम नाम
३. तृतीय सर्ग ----------दीक्षा प्राप्ति (७७ पद्य)
४. चतुर्थ सर्ग ----------पूर्णता लाभ (५४ पद्य)
५ .पञ्चम सर्ग----------लक्ष्य निश्चय (५८ पद्य)
६. षष्ठ सर्ग ----------गुरु प्रयाण (५४ पद्य)
७ .सप्तम सर्ग ----------हिमाचल दर्शन (७७ पद्य)
८ . अष्टम सर्ग----------भारत भ्रमण (८० पद्य)
९. नवम सर्ग----------शिकागो गमन(५२ पद्य)
१०. दशम सर्ग ----------अमेरिका वक्तृता (५८ पद्य)
११.एकादश सर्ग ----------धर्म सभानन्तरम् (८५ सर्ग)
१२.द्वादश सर्ग ----------इंलैंड-अमेरिका भ्रमण (७१ पद्य)
१३. त्रयोदश सर्ग ----------यूरोप भ्रमणम् (५६ पद्य)
१४. चतुर्दश सर्ग ----------भारत आगमन (५८पद्य)
१५. पञ्चदश सर्ग ----------रामकृष्ण आश्रम स्थापना (६०पद्य)
१६ . षोडश सर्ग ----------उपदेशात्मक (५६ पद्य)
१७. सप्तदश सर्ग----------पुनर्भ्रमण (६० पद्य)
१८. अष्टादश सर्ग ----------निर्वाण (६० पद्य)

विषयवस्तु के आधार पर छंदों का प्रयोग
महाकवि क्षेमेन्द्र ने अपने सुवृत्ततिलक में विभिन्न छंदों के व्यवहार का विधान करते हुए लिखा है :

प्रबन्ध: सुतरां भाति यथास्थान निवेशितै:।
निर्दोष गुण संयुक्तै: सुवृत्तै मौक्तिकैरपि।।

अर्थात जिस प्रकार छिद्रयुक्त तथा कीटजग्ध आदि दोषों से रहित पिरोये गए मोतियों के मुक्ताहार उचित स्थान पर शोभित होते हैं, ठीक उसी प्रकार दोष रहित, गुण युक्त एवं प्रसंगोचित छंदों का यथास्थान प्रयोग भी मनोरम होता है।
क्षेमेन्द्र ने प्रसिद्ध छंदों के प्रयोगस्थल का कवियों के लिए निर्देश किया है:-
अनुष्टुप-- अनुष्टुभ छंद का प्रयोग लक्षण ग्रंथों के निर्माण में, पुराणों के उपदेश तथा काव्य एवं महाकाव्यों में कथा को विस्तार देने लिये किया जाना चाहिए, उपजाति के प्रयोग उद्दात्त नायक-नायिकाओं के रूपसौन्दर्य वर्णन में तथा वसंतादि ऋतुओं के वर्णन में करना चाहिए। रथोद्धता छंद का प्रयोग चन्द्रमा, चन्दन, उद्यान आदि उद्दीपन भावों के वर्णन में, वंशस्थ का संधि-विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव आदि राजनीतिक वर्णन में, वसन्ततिलका का वीर एवं रौद्र रसों के मिश्रित वर्णन में, मालिनी का प्रयोग सर्ग या प्रतिसर्ग की समाप्ति पर, शिखरिणी का किसी विषय की सीमा के निर्धारण में, हरिणी का पयोग उदारता एवं औचित्यपूर्ण चर्चा के स्थलों पर, पृथ्वी छंद का प्रयोग निंदा, क्रोध, धिक्कार तथा तिरस्कारपूर्ण शब्दावली के प्रयोग में, मंदाक्रांता का वर्षा ऋतु वर्णन, प्रवास, विरह तथा अन्य मानसिक व्यथाओं के वर्णन में, करना चाहिए। शार्दूलविक्रीडित के प्रयोगस्थल हैं शूरता-वीरता के वर्णन, युद्ध आदि का वर्णन भय उत्पन्न करने वाले स्थल इत्यादि। स्रग्धरा का प्रयोग गति की तीव्रता, वायुवेग, नदीप्रवाह आदि के वर्णन में किया जाना चाहिए।

विवेकानन्दचरितं महाकाव्य में प्रयुक्त प्रमुख छन्द
त्र्यम्बक शर्मा भण्डारकर काव्यकला के सर्वांगीण प्रयोग में सफल हुए हैं इसका प्रथम प्रत्यक्ष प्रमाण है उनके द्वारा प्रयुक्त छन्द। काव्य में छंद:प्रयोग के जो नियम प्रदर्शित किये गए हैं; उन सबका यथावत् पालन करना यद्यपि सभी कवियों के लिए संभव न होता हो, तथापि इस महाकाव्य में इनका यथासंभव पालन हुआ है। महाकाव्य के लक्षण में आचार्यों ने यह निर्दिष्ट किया है कि प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग हो परन्तु सर्गांत में छन्द परिवर्तन करना चाहिए। यद्यपि इस नियम का शत-प्रतिशत तो नहीं पर अधिकांश सर्गों में एक ही छन्द का प्रयोग मिलता है। सर्गांत छन्द परिवर्तन सर्वत्र पाया गया है। प्रथम सर्ग का वसन्ततिलका से प्रारम्भ कर छठे पद्य में वंशस्थ, पश्चात् सम्पूर्ण सर्ग में उपजाति का प्रयोग है। सर्गांत में वसन्ततिलका से परिवर्तन करते हुए कवि ने स्वयं कहा है "अत्र सर्ग समाप्त्यवसरेवसानैन्यवृत्तकै: इति नियमानुसारम् वृत्त परिवर्तनं विहितम्"
महाकाव्य का द्वितीय सर्ग वसन्ततिलका छन्द से प्रारंभ होता है और सर्गान्त मालिनी छन्द से किया गया है। तृतीय सर्ग का प्रारंभ उपजाति से, मध्य अनुष्टुभ से और सर्गान्त स्रग्धरा से किया गया है। आगे विवेच्य यह है कि कवि ने अपने इस महाकाव्य में किन छन्दों का सबसे अधिक और कथावस्तु के अनुरूप प्रयोग कियाहै।

अनुष्टुभ :--इस छन्द का २८७ बार प्रयोग किया है। तृतीय एवं सप्तम सर्ग में इसका सर्वाधिक प्रयोग है। तृतीय सर्ग में स्वामि विवेकानंद की दीक्षा प्राप्ति तथा पाश्चात्य जगत में विश्वधर्म संकीर्तन के लिए विवेकानंद ही सक्षम है, एस अभिलाषा के साथ ही श्री रामकृष्ण परमहंस की व्याकुलता का वर्णन है जो कथा के विस्तार को दर्शाता है। सप्तम सर्ग हिमालय दर्शन नाम से कहा गया है। विश्व कल्याण की भावना से ओतप्रोत स्वामि विवेकानंद के चरित्र को भारत राष्ट्र के सम्यक् आकलन तथा उसके उत्थान हेतु सम्यक् दर्शन के प्रथम सोपान रूप में हिमालय दर्शन से प्राप्त प्रेरक पहलुओं का विस्तार से वर्णन किया गया है।

उपजाति (३३१)---- इस छन्द का कवि ने सबसे अधिक प्रयोग किया है। संकल्प-विकल्प नामक प्रथम सर्ग में ४५ पद्य उपजाति में हैं। लक्ष्य-निश्चय नामक पञ्चम सर्ग में ५२ पद्य शिकागोगमन नामक नवम सर्ग में ५१, यूरोपभ्रमण नामक १३वें सर्ग में ५४ पद्य उपजाति में हैं। १४वें सर्ग में अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है लेकिन सबसे अधिक १३ छन्द उपजाति के हैं अंतिम सर्ग निर्वाण में ५१पद्य उपजाति छन्द में हैं।

रथोद्धता (५४) ---- गुरुप्रयाण नामक छठे सर्ग में कवी ने एस छन्द का प्रयोग

किया है। विषाद, वैराग्य, प्रयाण आदि विषयों के वर्णन में रथोद्धता का प्रयोग मिलता है।

वैतालीय (१२५)---- १२ वें सर्ग जहाँ पर इंग्लेण्ड-अमेरिका भ्रमण तथा स्वामीविवेकानंद की यश:गाथा का वर्णन है। इसी प्रकार अन्य छंदों के प्रयोग भी देखे जा सकते हैं। सम्पूर्ण महाकाव्य में सर्गानुसार छंदों के प्रयोग को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है :---

सर्गानुसार छंदों की संख्या
(अगले पृष्ठ पर)

सर्ग	पद्य क्रमांक	छन्द नाम	कुल संख्या
प्रथम	१-२, ४-५ एवं ५१	वसन्ततिलका	५
	३	मालिनी	१
	६	वंशस्थ	१
	७-५१	उपजाति	४५
द्वितीय	१-५१	वसन्ततिलका	५१
	५२-५३	मालिनी	२
तृतीय	१	उपजाति	१
	२-७५	अनुष्टुभ	७४
	७६	स्रग्धरा	१
चतुर्थ	१-५०	उपजाति	५०
	५१-५३	वसन्ततिलका	३
पंचम	१-३	उपजाति	३
	४-	शार्दूलविक्रीडितम्	१
	५-५६	उपजाति	५२
	५७-५९	शार्दूलविक्रीडितम्	३
षष्ठ	१	वसन्ततिलका	१
	२-५२	रथोद्धता	५१
५३-५४		शा० वि०	२
सप्तम	१	रथोद्धता	१
अष्टम	१-७६	वंशस्थ	७६
	७७	पृथिवी	१
	७८-८०	शा० वि०	२
नवम	१-५१	उपजाति	५१
	५२	शा० वि०	१
दशम	कुल ५६ पद्य	३५ छंदों का प्रयोग	५६
एकादश	१	उपजाति	१
	२-८३	अनुष्टुभ	८२
	८४-८५	शा० वि०	२
द्वादश	१	उपजाति	१
	२-६९	वैतालीय	६८
	७०-७१	शा० वि०	२
त्रयोदश	१	वसन्ततिलका	१
	२-५५	उपजाति	५४
	५६	शा० वि०	१
चतुर्दश	१, ४, ९-१०, १४-१६,	२१ वसन्ततिलका	९
	२,११-१२,	मालिनी	३
	३,	मन्दाक्रान्ता	१
	१३, ३४, ३८, ४२	शा० वि०	४
	१७, २६	स्रग्धरा	२
	१८-२०, २७-३१, ३९-४१, ४३	उपजाति	१३
	२२	रथोद्धता	१
	३२-३३	भुजंगप्रयात	२
	३५-३७	वंशस्थ	३
पञ्चदश	१-५७	अनुष्टुभ	५७
	५८	शिखरिणी	१
	५९-६०	शा० वि०	२
षोडश	१	उपजाति	१
	२-५०		४९
	५१	हरिणी	१
	५२-५४	स्रग्धरा	३
	५५	पृथिवी	१
	५६	शा० वि०	१
सप्तदश	१, ५९	वसन्ततिलका	२
	२-५८	वैतालीय	५७
	६०	शा० वि०	१
अष्टादश	१-५१, ५७-५८	उपजाति	५३
	५२-५३	वसन्ततिलका	२
	५४	शा० वि०	१
	५५-५६	शिखरिणी	२

निष्कर्ष :--- छन्द:प्रयोग के उपर्युक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि शान्तरस प्रधान तथा उदात्त नायक के चरित्र- चित्रण में कवि ने छन्द:शास्त्र के नियमानुसार तथा पुराणादि में में प्राय: प्रयोग किए गए उपजाति और अनुष्टुभ छंदों का सर्वाधिक प्रयोग किया है। प्रकृति वर्णन दु:ख शोकादि वर्णन, हर्षोल्लासादि वर्णन में तथानुरूप छंदों के प्रयोग दिखाई देते हैं। छन्द:प्रयोग के अध्ययन के आधार पर अन्य काव्यों के वस्तु, नायक, रस तथा काव्यों की प्रकृति एवं उच्चावाचय का निर्णय किया जा सकता।